



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-04
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

भारत के संविधान में राजभाषा

राष्ट्रपति के आदेश, 1960

(गृह मंत्रालय की दि. 27 अप्रैल, 1960 की अधिसूचना संख्या 2/8/60-रा.भा., की प्रतिलिपि)

अधिसूचना

- राष्ट्रपति का निम्नलिखित आदेश आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है :- नई दिल्ली, दिनांक 27 अप्रैल, 1960

आदेश

लोकसभा के 20 सदस्यों और राज्य सभा के 10 सदस्यों की एक समिति प्रथम-राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने लिए और उनके विषय में अपनी राय राष्ट्रपति के समक्ष पेश करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 344 के खंड (4) के उपबंधों के अनुसार नियुक्त की गई थी। समिति ने अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति के समक्ष 8 फरवरी, 1959 को पेश कर दी। नीचे रिपोर्ट की कुछ मुख्य बातें दी जा रही हैं जिनसे समिति के सामान्य दृष्टिकोण का परिचय मिल सकता है :-

- (क) राजभाषा के बारे में संविधान में बड़ी समन्वित योजना दी हुई है। इसमें योजना के दायरे से बाहर जाए बिना स्थिति के अनुसार परिवर्तन करने की गुंजाइश है।
- (ख) विभिन्न प्रादेशिक भाषाएं राज्यों में शिक्षा और सरकारी काम-काज के माध्यम के रूप में तेजी से अंग्रेजी का स्थान ले रही हैं। यह स्वाभाविक ही है कि प्रादेशिक भाषाएं अपना उचित स्थान प्राप्त करें। अतः व्यवहारिक दृष्टि से यह बात आवश्यक हो गई है कि संघ के प्रयोजनों के लिए कोई एक भारतीय भाषा काम में लाई जाए। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि यह परिवर्तन किसी नियत तारीख को ही हो। यह परिवर्तन धीरे-धीरे इस प्रकार किया जाना चाहिए कि कोई गड़बड़ी न हो और कम से कम असुविधा हो।
- (ग) 1965 तक अंग्रेजी मुख्य राजभाषा और हिन्दी सहायक राजभाषा रहनी चाहिए। 1965 के उपरान्त जब हिन्दी संघ की मुख्य राजभाषा हो जाएगी अंग्रेजी सहायक राजभाषा के रूप में ही चलती रहनी चाहिए।
- (घ) संघ के प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी के प्रयोग पर कोई रोक इस समय नहीं लगाई जानी चाहिए और अनुच्छेद 343 के खंड (3) के अनुसार इस बात की व्यवस्था की जानी चाहिए कि 1965 के उपरान्त भी अंग्रेजी का प्रयोग इन प्रयोजनों के लिए, जिन्हें संसद् विधि द्वारा उल्लिखित करे तब तक होता रहे जब तक वैसा करना आवश्यक रहे।
- (ङ.) अनुच्छेद 351 का यह उपबन्ध कि हिन्दी का विकास ऐसे किया जाए कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके, अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस बात के लिए पूरा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए कि सरल और सुबोध शब्द काम में लाए जाएं।

रिपोर्ट की प्रतियां संसद के दोनों सदनों के पटल पर 1959 के अप्रैल मास में रख दी गई थीं और रिपोर्ट पर विचार-विमर्श लोक सभा में 2 सितम्बर से 4 सितम्बर, 1959 तक और राज्य सभा में 8 और 9 सितम्बर, 1959 को हुआ था। लोक सभा में इस पर विचार-विमर्श के समय प्रधानमंत्री ने 4 सितम्बर, 1959 को एक भाषण दिया था। राजभाषा के प्रश्न पर सरकार का जो दृष्टिकोण है उसे उन्होंने अपने इस भाषण में मोटे तौर पर व्यक्त कर दिया था।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— रामाशीष सिंह —	3
सूद के रूपये —	
— श्वेता त्रिपाठी	4
सांता क्लोज —	
— कृष्ण कुमार दास	8
कश्मीर —	
— राहुल कर्मकार	10
अग्नीशाखा केसर—	
— कुमारी साक्षी	12
मुदगल नगरी	
— अवधेश कुमार	14
योग्यता नेता बनने की	
— सच्चिदानंद जिज्ञासु	15
जरा हंसिये तो	
— आदिश	16
भारतीय संस्कृति की..	
— यमुना प्रसाद राय	17
वीर गाथा —	
— अभिनव सिंह	18
हवाई प्यार	
— चंद्रकांत	18
चित्र वीथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www1.er.indianrailway.gov.in

गीता जयंती

विश्व के किसी भी धर्म या संप्रदाय में किसी भी ग्रंथ की जयंती नहीं मनाई जाती। हिंदू धर्म में भी सिर्फ गीता जयंती मनाने की परंपरा पुरातन काल से चली आ रही है। हिंदू पंचांग के अनुसार, मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को गीता जयंती का पर्व मनाया जाता है। श्री गीताजी की उत्पत्ति धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मार्गशीर्ष मास में शुक्लपक्ष की एकादशी को हुई थी। यह तिथि मोक्षदा एकादशी के नाम से विख्यात है। इस बार ये पर्व 10 दिसंबर, शनिवार को है। गीता एक सार्वभौम ग्रंथ है। यह किसी काल, धर्म, संप्रदाय या जाति विशेष के लिए नहीं अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिए है। एक-दूसरे के प्राणों के प्यासे कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध शुरू होने से पहले योगीराज भगवान श्रीकृष्ण ने विशाल सेना के बीच मोह में फंसे और कर्म से विमुक्त अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को छंद रूप में यानी गाकर उपदेश दिया, इसलिए इसे गीता कहते हैं। चूंकि उपदेश देने वाले स्वयं भगवान थे, अतः इस ग्रंथ का नाम भगवद्गीता पड़ा। भगवद्गीता में कई विद्याओं का वर्णन है, जिनमें चार प्रमुख हैं- अभय विद्या, साम्य विद्या, ईश्वर विद्या और ब्रह्म विद्या। माना गया है कि अभय विद्या मृत्यु के भय को दूर करती है। साम्य विद्या राग-द्वेष से छुटकारा दिलाकर जीव में समत्व भाव पैदा करती है। ईश्वर विद्या के प्रभाव से साधक अहंकार और गर्व के विकार से बचता है। ब्रह्म विद्या से अंतरात्मा में ब्रह्म भाव को जागता है।

गीता माहात्म्य पर श्रीकृष्ण ने पद्म पुराण में कहा है कि भवबंधन से मुक्ति के लिए गीता अकेले ही पर्याप्त ग्रंथ है। गीता का उद्देश्य ईश्वर का ज्ञान होना माना गया है। अन्य ग्रंथ किसी मनुष्य द्वारा लिखे या संकलित किए गए हैं, जबकि गीता का जन्म स्वयं श्रीभगवान के श्रीमुख से हुआ है।

गीता में यह कहा गया है कि अपने धर्म का पालन करना ही निष्काम कर्मयोग है। इसका सीधा का अर्थ है कि आप जो भी कार्य करें, पूरी तरह मन लगाकर तन्मयता से करें। फल की इच्छा न करें। अगर फल की अभिलाषा से कोई कार्य करेंगे तो वह सकाम कर्म कहलाएगा। गीता का उपदेश कर्मविहीन वैराग्य या निराशा से युक्त भक्ति में डूबना नहीं सिखाता, वह तो सदैव निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देता है। वैसे तो भगवान ने ज्ञान, और भक्ति दोनों के ही विषय में विस्तार से बताया है ताकि मनुष्य इस संसार में सुखपूर्वक रहते हुए इस संसार सागर से पार हो सके।

— रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर

सूद के रुपये

गांव का एक गरीब किसान था हरिहर। मां-बाप ने उसके जीने के लिए सिर्फ एक झोपड़ी भर ही छोड़ी थी। हरिहर का बाप रघुआ गांव के किसी धनी व्यक्ति का हल चलाता था और बेटी ललमतिया के साथ उसकी पत्नी गोमती उसके साथ ही रहती थी। जीविका के नाम पर दो-चार सूअर पाल रखे थे। जिनमें एक-दो बकरियां भी थीं। रोज सबेरे-सबेरे उठ कर वह अपने सूअरों को लेकर चराने के लिए निकल पड़ता। एक-दो घंटा उन्हें इधर-उधर घुमा कर जल्दी-जल्दी लौट आता। इधर उसकी ललमतिया बकरियों को चराने के लिए निकल पड़ती। खेती-बारी के दिनों में वह मुंह में कुछ डाल कर मालिक के दरवाजे पर जा पहुंचता। बैलों की जोड़ी को नांद से खोल कर उन्हें हांकते हुए हरिहर अपने कंधे पर हल और जुआठ उठाए गुनगुनाते हुए जाने लगता। खेतों में हल चलाने जाते समय वह एक छड़ी, जो उसके बैलों को हांकने के काम आती, कंधे पर टेक देकर हल रोके रहता। सिर पर एक पगड़ी और कमर में एक धोती होती। शरीर का शेष भाग नंगा ही रहता। धूप और बरसात की भी उसे कोई विशेष परवाह नहीं होती।

दोपहर होते-होते वह पांच-सात कट्टा भूमि कृषि के लायक बना देता और बैलों को खोल कर घर लौट जाता। घर जाते ही कड़ी मेहनत की थकान शीघ्र ही हावी हो जाती और वह खा-पीकर थोड़ा सा आराम करने लगता। आषाढ़ के दिन आ गए। खेतों में धान की रोपनी का कार्य शुरू हो गया। आज भी वह खेतों से कड़ी मेहनत करके ही घर लौटा था। पिछले दो दिनों से लगातार धीरे-धीरे बारिस हो रही थी। उसकी फूस की झोपड़ी पानी से भींग-भींग कर सील चुकी थी। वर्षा बीच-बीच में जैसे तेज हो जाती तो झोपड़ी से पानी टपकने लगता। झोपड़ी की पूरी जमीन गीली हो चुकी थी। उसमें कहीं भी ऐसी जगह नहीं बची थी, जहां सिर छुपाया जा सके। रात में भी पानी बरसता ही रहा और उसकी ललमतिया कभी इधर, कभी उधर होती। हरिहर और गोमती दोनों ही खामोश थे। चाह कर भी कुछ नहीं किया जा सकता था।

बारिस थमी नहीं। पिछली रातों को सो नहीं पाने के कारण ललमतिया नींद से बिलबिला रही थी। वह बोली-“मां, मैं सुखना चाचा के बरामदे में सो रहती तो बढ़िया रहता। झोपड़ी में कहीं सूखा स्थान नहीं है। बड़ी नींद आ रही है।” गोमती ने कुछ सोचा और वहां जाने के लिए हरिहर से पूछा। वह उनको वहां जाने तो नहीं देना चाहता था पर रोक भी नहीं पा रहा था। सुखना का एक बेटा फेकना बदचलन और दुष्ट था। वह गांव की लड़कियों को छेड़ा करता था। कई बार उसकी पिटाई भी हो चुकी थी, पर उसकी आदत में कोई परिवर्तन नहीं हो सका था। ललमतिया भी चौदह पार कर रही थी। वह यही सब सोच रहा था। फिर भी पत्नी के दुबारा पूछने पर उसे वहीं सोने जाने के लिए हां करनी पड़ी। ललमतिया अपनी मां के साथ सुखना चाचा के बरामदे में जा पहुंची। सुखना का बेटा फेकना भी वहीं सोया करता था। ललमतिया की मां ने सुखना से आकर पूछा तो सुखना ने वहां सोने की अनुमति दे दी। ललमतिया की मां आश्वत होकर अपने घर लौट गई। झींगरों की झनझनाहट, मेंढ़कों की टरटहारट और कीटों की चीख-पुकार से सारा वातावरण डरावना बन रहा था। रह-रहकर कड़कती बिजली शरीर में सिहरन उत्पन्न कर देती। ललमतिया इस सब से बेखबर सो गई।

तभी उसके होठों पर किसी गर्म और मुलायम चीज का दबाव महसूस हुआ। वह चीख पड़ी। चीख सुनते ही उसकी बहन भी जाग गई। बरामदे के दूसरे किनारे पर सोए सुखना ने उठकर टार्च की रोशनी ललमतिया की ओर फेंकी। ललमतिया, उसकी छोटी बहन और सुखना तीनों ने ही देखा, फेकना ललमतिया पर झुका हुआ था। सुखना अपने बेटे की इस हरकत से अच्छी तरह वाकिफ था। थोड़ा सा हल्ला-गुल्ला भी समस्या उत्पन्न कर सकता था। अतः बात बिगड़ न जाए, सुखना अपने बेटे का पक्ष लेते हुए ललमतिया पर बिगड़ उठा। वह उसे भला-बुरा बके जा रहा था। बीच-बीच में वह उसके परिवार को भी गाली दे रहा था। सुखना की तेज आवाज सुन कर आस-पासके लोग दौड़े भागे वहां तक आ पहुंचे। सुखना सबके सामने ललमतिया को दोषी ठहरा रहा था। ललमतिया तो सिर्फ रोए जा रही थी। ऐसा भी हो सकता है, उसने कभी सोचा तक नहीं था। अब तक हरिहर और गोमती भी शोर-गुल सुनकर आ पहुंचे। तमाशा देखने आये लोग भी मुंहदेखी ही कर रहे थे। जिसे देखो, वही सुखना की तरफ से ही बोलता और ललमतिया को भला-बुरा कहता था। हरिहर और गोमती को तो काठ मार गया। थोड़ी देर बाद वे भींगते हुए अपने बच्चों के साथ अपनी झोपड़ी में लौट पड़े। एक दिन मौका देखकर गोमती बोली - “मैं तुमसे कितनी बार कह चुकी हूं कि इस साल ललमतिया के हाथ पीले कर दो। पर तुम हो कि सुनते ही नहीं!”

“अभी कितने दिन की हुई है यह कि तुम परेशान हो रही हो?” “उस दिन अगर कहीं ऊंच-नीच हो जाती तो?”

हरिहर पत्नी की बात सुन कर किसी सोच में डूब गया। लड़की बड़ी तो हो गई है। गांव में उस दिन की घटना पर तरह-तरह की बातें हो रही हैं। लोग पता नहीं, क्यों मुझे बार-बार उसकी शादी कर देने को कहते हैं! आखिर उसने इसी बरस शादी कर देने का अपना निर्णय सुना दिया। पत्नी आश्वत हो गई। शादी-ब्याह के दिन आ गए। गोमती दिन-रात अपने पति को फेकना वाली घटना की याद दिलाती और उसकी शादी कर देने के लिए दबाव डालती। तंग आकर एक दिन हरिहर बेटी के लिए वर खोजने निकल पड़ा। कहीं वर मिलता तो घर नहीं, कहीं घर अच्छा मिलता तो योग्य वर नहीं। फिर भी वह अपने कार्य में लगा रहा। एक जगह वर भी अच्छा था और घर भी सुंदर। लड़के वाले तीन हजार रुपये नकद की मांग कर रहे थे और उसकी दूसरी शर्त थी- बारातियों की सुंदर आवभगत। हरिहर ने उनकी शर्त स्वीकार कर ली।

शादी आनन-फानन में तय हो गई। सिर्फ दस दिन का समय रखा गया। इतने ही दिनों में सारी व्यवस्था पूरी करके शादी कर देनी थी। हरिहर खुशी-खुशी घर लौट आया। उसके मन का बोझ हल्का हो गया था। पत्नी भी फूली न समाई। पर यह खुशी ज्यादा देर तक टिक न सकी। मन लायक घर-वर मिल जाने की खुशी शीघ्र ही लुप्त होने लगी। घर में तो फूट कौड़ी नहीं थी। इतने कम समय में रुपये की व्यवस्था कैसे होगी? भारी चिंता बार-बार मस्तिष्क पर उभरने लगी। हरिहर का दिमाग काम नहीं करता था कि किस तरह वह इतने पैसों का जुगाड़ कर पाएगा? गांव के लगभग सभी धनी-गरीब के पास अपनी फरियाद लेकर पहुंचा। सबने अपनी मजबूरी बतलाई। कोई भी ऐसा नहीं मिला जो उसे रुपये सूद पर भी दे सकता। पैसों का कहीं जुगाड़ न हो पाने से हरिहर दुखी मन से घर लौट आया। पत्नी ने पानी लाकर दिया। वह बेमन से हाथ मुंह धोकर झो पड़ी के बाहर बिछी चटाई पर लेट गया। “कहीं पैसों का जुगाड़ा हुआ?” पत्नी की आवाज सुन कर वह सुध में आया। “नहीं।” “फिर क्या होगा?” “ईश्वर ही मालिक है।” “लेकिन....। अब तो सिर्फ छः दिन ही बचे हैं। अभी तक कुछ भी नहीं हो सका है।” “सब कोई कुछ गिरवी रख कर ही पैसे देना चाहते हैं।” “हे भगवान! कैसे अब चलेगा? ऐसा भी है तो कुछ नहीं, जिसे गिरवी भी रखा जा सके।” दोनों इसी उधेड़ बुन में पड़े रहे।

दूसरे दिन हरिहर ने अपने सुअरों के लिए ग्राहक बुलाए। उन्होंने भी उसकी मजबूरी समझ कर सात-आठ हजार के सुअरों की कीमत दो हजार आंकी। शादी में लगभग पांच हजार तक खर्च बैठ रहा था। उसने हिसाब लगाया, पर घर समूची संपत्ति बेच देने पर भी पांच हजार तक के लिए पूरी नहीं बैठ रही थी। शादी टल जाने का अर्थ था बेचनी। फेकना की एक गलत कोशिश ने ललमतिया के चरित्र को तो संदिग्ध कर ही दिया था। उस पर भी शादी टल जाती है तो गांव के लोग उसे जीने नहीं देंगे। हरिहर यही सोच-सोच कर पागल हो रहा था। बाप-दादा की कोई जमीन ऐसी नहीं थी, जिसे बंधक रख कर पैसे लिए जा सकें। गांव में उसने किस-किस का काम नहीं किया था, पर आज उसकी आवश्यकता पर सभी मुंह फेर रहे थे।

गांव में कईयों के घर अनाप-शनाप खर्च हो रहे हैं, कोई बिना काम के मोटरों से घूमता है, बेवजह केस-मुकदमे लड़े जा रहे हैं। एक ही जमीन को अपनी बना लेने की लिए उस जमीन की बोलियां बोल कर लिखवाया जाता है। अपनी झूठी शानो-शौकत को निभाने के लिए पैसों की बर्बादी की जा सकती है। पर मैं गरीब हूं, मेरे पास बाप-दादा की कोई जमीन नहीं तो मुझे पैसे कर्ज भी नहीं मिल रहे हैं। औरों की तरह मैं भी तो सूद चुका ही देता। पर कोई देना नहीं चाहता। वह अपने को उन विचारों से दूर नहीं कर पाता। पल-पल उसे ललमतिया का चेहरा दिखाई पड़ता है। अगर उसकी शादी टूट जाएगी तो क्या उसका दिल नहीं टूट जाएगा? बेचारी का क्या दोष, उसने जीवन क्या होता है, अभी यह भी नहीं जाना है। फिर भी उसे पति के घर जाना होगा। दुनिया की रीति है। उसे कौन तोड़ेगा? शादी-ब्याह में खर्च तो आज फैशन हो गया है। मुझे उसकी कोई चिंता नहीं है। लेकिन गांव वालों की नजर में मेरी बेटी खटकने लगी है। कमा कर बेटी को मैं खिलाता हूं और वह भारी पूरे गांव को लगती है।

सीताराम बाबू के यहां पच्चीस वर्ष की लड़की है, लेकिन किसी को बुरा नहीं लगता। कोई तो उनसे जाकर नहीं कहता। कहेगा भी तो कैसे? वो तो ऊंची जाति के लोग हैं। उनकी बेटी शहर में रहती है और पढ़ती है। लेकिन हम लोग गरीब हैं, गंदे हैं, नीची जाति के लोग हैं। इसलिए लोग हम पर अंगुली उठाने से नहीं चूकते। लेकिन ललमतिया का क्या दोष है? उसने कोई अपराध किया ही नहीं है। क्या वह अपराधी है कि उसे इसी उम्र में ससुराल भेज दूं? गांव के ही तो लोग हैं, जिन्होंने ललमतिया को उस दिन बदनाम कर दिया। बुरा हो सुखना का जो अपने चरित्रहीन बेटे को दोष नहीं देकर निर्दोष ललमतिया पर लांछन लगाने में नहीं हिचका। सभी ओर से थके-हारे मनुष्य को ईश्वर के सिवाय और कोई रास्ता नजर नहीं आता है। हरिहर की भी स्थिति वैसी ही बन गई थी। विवाह का दिन एकदम सिर पर आ पहुंचा, पर पैसों का कोई जुगाड़ अब तक नहीं हो पाया था। ईश्वर पर अपनी इज्जत को सौंप कर वह थोड़ी-सी शांति महसूस करता। पत्नी का चिंता में डूबा चेहरा और ललमतिया का इन सबसे बेखबर उन्मुक्त स्वभाव अब उसको कष्ट के अवदान ही लग रहे थे।

आज भी वह अपने सूअरों को सबेरे-सबेरे खोल कर चराने निकल पड़ा। तभी रास्ते में गांव की ओर आते हुए प्रकाश बाबू दिखाई दिए। एक आशा की क्षीण किरण मन में उभरी और अनायास ही उसके कदम उनकी ओर चल पड़े। बोल पड़ा- “मालिक राम राम! अभी आ रहे हैं क्या?” “हां! कोई सवारी नहीं मिलने से रात भर स्टेशन पर ही रहना पड़ा। गांव-घर का समाचार ठीक तो है..।” “हां मालिक! सब ठीक-ठाक ही चल रहा है” कह कर हरिहर प्रकाश बाबू की अटैची उनके हाथों से लेकर अपने कंधे पर उठा कर चल पड़ा। रास्ते में ही उसने अपनी समस्या प्रकाश बाबू को बताई।

“कितने रुपयों की तुम्हें जरूरत पड़ेगी, हरिहर?” “यही कोई पांच हजार रुपये मालिक।” “पैसों का इंतजाम किया है?”

“नहीं मालिक। ईश्वर ही मालिक है। घर में फूटी कौड़ी भी नहीं है और परसों बारात आने वाली है।” कहते-कहते उसकी आंखें डबडबा आईं। प्रकाश बाबू का दिल पसीज गया। उन्होंने घर पर आने को कहा। मन में उसे एक आश बंधी और वह सामान पहुंचा कर पुनः अपने सूअरों को देखने चला गया। घर पहुंच कर प्रकाश बाबू हाथ-मुंह धोकर विश्राम कर रहे थे। इसी बीच हरिहर दो बार आकर लौट गया था। जब प्रकाश बाबू की नींद खुली तो किसी ने बताया कि हरिहर आया था। उन्हें याद आया और उन्होंने हरिहर को पांच हजार रुपये देने के लिए घर के मालिक अपने पिता से अनुरोध किया। पहले उसके पिता यानी दिवाकर राय कुछ नहीं बोले पर दुबारा आग्रह सुनकर बोले-“अभी अपने ही पास कितने काम पड़े हैं।” “फिर भी तो।”

“तुम्हें पता है, इस साल बैल खरीदना बहुत जरूरी है। एक महीने के बाद धान की फसल रोपनी है। अरे हां, दस हजार में बिनकुआ वाली जमीन को भी लिखवा लिया जाता। नहीं तो चढ़ ऊपरी में वह भी हाथ से निकल जाएगी।” “पर पिताजी! पांच हजार दे देने के बाद भी बैल खरीदने और रोपनी आदि के लिए पैसे तो बचेंगे ही।” “उससे क्या हुआ? जमीन ही रजिस्ट्री करवा ली जाएगी।?” “पर पिताजी, हरिहर की बेटी की शादी है परसों। बेचारा पैसों का जुगाड़ नहीं होने से रो रहा था।” “तुम नहीं जानते, आजकल ये छुटभैये बड़े बदमाश हो गए हैं। एक बात तक नहीं सुनते। इनको एक पैसा देने की जरूरत नहीं है।”

तभी प्रकाश बाबू की मां आ गई। वह बड़े ही नेक दिल, दूसरों के दुखों से शीघ्र ही आर्द्र होने वाली धार्मिक विचारों की महिला थीं। अपने बेटे का पक्ष लेते हुए बोली-“प्रकाश ठीक ही कह रहा है। जाने दीजिए, दे दीजिए उसे रुपये, बेचारे के यहां परसों शादी है और अभी तक उसने कोई सामान तक नहीं जुटाया है।” काफी देर तक हरिहर को पैसे दिए जाने को लेकर विचार-विमर्श चलता रहा। आखिर पत्नी और बेटे की हठ के आगे उन्हें उसे पैसे देने के लिए स्वीकृति देनी पड़ी। तभी पुनः हरिहर आ गया। प्रकाश बाबू के पिता सबसे पहले आंगन से ओसारे में आए। सिर पर परदा डाले उनकी मां भी बाहर आकर पल्ले से सट कर खड़ी हो गई। अंत में प्रकाश बाबू भी आकर दीवाल से सट कर खड़े हो गए।

“तुम्हें कितना पैसा चाहिए?” “मालिक! पांच हजार रुपये।” “रुपये कब लौटाओगे?” “तीन ही महीने में लौटा दूंगा।” “क्या गिरवी रखोगे?” “मालिक, हमें रुपये सूद पर दे दीजिए। मेरे पास क्या है, जिसे गिरवी रखूंगा?” “लेकिन इतना रुपया लौटाओगे कैसे?” मालिक ! अपने पास सूअर तो हैं पर अभी मेरी गरज की वजह से दो हजार रुपये से ज्यादा नहीं मिल रहे हैं। आषाढ़ में सात-आठ हजार रुपये में बिकेंगे। मालिक, मेरा विश्वास कीजिए, मैं पैसे जरूर लौटा दूंगा। अभी आप मेरी इज्जत बचा लीजिए।

“ठीक है। ये पांच हजार रुपये हैं। महीना पांच रुपये सैकड़ा के हिसाब से हम तुम्हें देते हैं। लेकिन ठीक समय पर लौटा देना।” हरिहर को लगा, ईश्वर साक्षात् रूप में आज उसकी इज्जत बचाने खड़ा है। उसे इतने भारी सूद की चिंता नहीं थी। मन ही मन वह प्रकाश बाबू और भगवान की बार-बार जयकार कर रहा था। खुशी के मारे कई बार उसने अपना सिर झुकाया और अपने घर लौट गया। यह देखकर प्रकाश बाबू भी गर्व महसूस किए बिना न रह सके।

शादी हो गई। वर पक्ष वाले भी खुश थे। ललमतिया की सुंदरता पर उसका दुल्हा भी प्रसन्न था। उसके मन की मुराद पूरी हो गई थी। बारातियों की सुंदर ढंग से आवभगत हुई थी। किसी को कोई शिकायत नहीं थी। तीसरे दिन ललमतिया अपनी मां का घर छोड़कर पिया के देश चली गई। प्रकाश बाबू नौकरी से छुट्टी पर पांच महीने बाद पुनः घर वापस आए। हरिहर भी उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था। उनके आते ही उसने अपने सूअरों को बेचने के लिए ग्राहक बुलाया। अपने सभी जानवरों को बेचकर ललमतिया की शादी में लिया गया रुपया सूद समेत लौटा देना चाहता था। बातचीत हो गई। सभी सूअरों की कीमत सिर्फ पांच हजार रुपए ही तय बैठी। अब तक उसे आठ हजार रुपये लौटने थे।

उसके हिसाब से सूअरों के तीन हजार कम मिल रहे थे। ग्राहक रकम देकर जानवरों को परसों ले जाने को कह

कर चले गए। मेहनत- मजदूरी करके हरिहर ने किसी तरह दो हजार रुपये का और इंतजाम कर लिया था। फिर भी एक हजार रुपया और घट रहा था। मन ही मन वह दुखित और लज्जित हो रहा था। उसे अब कोई साधन नहीं दिख रहा था कि जिससे वह घट रहे रुपयों की व्यवस्था कर सके। डरते-डरते वह सात हजार रुपये लेकर प्रकाश बाबू के यहां पहुंचा। प्रकाश बाबू, उनके पिता और उनकी मां तीनों ही अपने बरामदे में बैठे किसी समस्या पर विचार कर रहे थे*। अभी हरिहर अपने गमछे में रुपयों को लपेटे हुए आ पहुंचा। आते ही सारे रुपयों को प्रकाश बाबू के पिताजी के सामने खोल कर रख दिया और हाथ जोड़कर वहीं जमीन पर बैठ गया।

रुपये गिनकर प्रकाश बाबू के पिता ने रख लिए। हरिहर कुछ कहना चाहकर भी कह नहीं पाया, न ही प्रकाश बाबू के पिता ने ही कुछ कहा। कुछ देर वह यूं ही बैठा रहा। फिर डरते-डरते वहां से चला गया। पर मन का भय अभी भी विद्यमान था। न जाने क्या होगा? दो महीने देर से तो पैसे लौटाए ही हैं और ऊपर से एक हजार रुपये कम भी दिए हैं। यही सोचते-सोचते वह अपने घर आ पहुंचा पर चिंता मुक्त नहीं हो सका था। गोमती के पूछने पर उसने अपने मन की चिंता का कारण बता दिया। अभी दोनों आपस में बतिया ही रहे थे कि एक आदमी उसे बुलाने आ पहुंचा। मार के डर से उसका हृदय थर-थर कांप रहा था। पत्नी भी उसकी परेशानी देख कर चलते समय उसके साथ हो ली। उसको अपने घर से प्रकाश बाबू के घर तक ही पहुंचने में हलक सूखता जान पड़ा।

दोनों प्रकाश बाबू के पिता के सामने हाजिर हुए। उनकी मुख मुद्रा की कठोरता देख कर उनका हृदय कांप उठा। तभी कड़कदार आवाज उनकी कानों में पड़ी-“क्यों रे हरिहरवा, कितना रुपया दिया है?”

“मालिक! सात हजार।”

“बस सात हजार ही तेरा हिसाब हुआ?”

“नहीं मालिक!”

“तो शेष एक हजार रुपया कब देगा?”

“और अभी नहीं दे सकता, हम पर दया कीजिए सरकार! मेरे सारे जानवर बिक चुके हैं। कोई आधार भी नहीं बचा है। मैं शेष पैसा भी चुका दुंगा।” “इसीलिए तुम लोगों को मैं रुपया देना नहीं चाहता था।” हरिहर और गोमती बार-बार गुहार कर रहे थे कि रुपये कुछ दिन के लिए छोड़ दिए जाने के लिए।

भीतर ही भीतर प्रकाश बाबू का मन तिलमिला रहा था। क्या दुनिया में मानवता का आधार रुपया ही है। आज उसे अपने पिता पर गुस्सा आ रहा था। उसने जितने लिए थे, उससे ज्यादा तो लौटा ही दिए हैं। फिर सूद के लिए उन्हें इतना जलील करने की क्या आवश्यकता है? घर की मर्यादा का ख्याल करके वह चुप थे वरना वह कब के फट पड़े होते।

दिवाकर ने प्रकाश और अपनी पत्नी की ओर दृष्टि डाली। सभी उन्हें नाखुश लगे। नजर घुमा कर उन्होंने पैसे को झट के से बाहर निकाला। प्रकाश बाबू को लगा, शायद वह रुपये हरिहर के पास फेंक देंगे। वह बोल ही पड़ते, पर पिता को पैसे गिनते हुए देखकर चुप ही रह गए।

उन्होंने गिन कर दो हजार रुपये अलग करके हरिहर के पास फेंक दिए। हरिहर और उसकी पत्नी की सूरत रोनी हो आई। तभी उन्होंने नर्म आवाज में कहा- “देख हरिहरवा, ये दो हजार रुपये सूद के तू वापस ले ले और सूद के शेष बचे रुपये भी चुकाने की जरूरत नहीं है। इन रुपयों से अपने लिए कुछ जानवरों को खरीद लेना ताकि तुम्हारे परिवार के आय का स्रोत नष्ट न हो जाए।”

प्रकाश बाबू और हरिहर, किसी को अपने कानों पर विश्वास न हुआ। दोनों एक ही साथ बोल पड़े- “सच!”

“हां, एकदम सच!” मैंने तुम्हें सूद पर रुपये इसलिए कह कर दिये थे कि तुम लापरवाही न बरतोगे और रुपये समय पर लौटा दोगे। और हां, हमारे परिवार में सूद को अच्छा नहीं समझा जाता। अतः मुझे सूद नहीं चाहिए। मैंने जो दिया था, वह मुझे मिल गया। उससे अधिक की अपेक्षा नहीं है। ईश्वर का दिया सब कुछ तो है ही।

अप्रत्याशित सुखद घटना बड़ी ही मीठी लगती है। हरिहर की हालत उस गूंगे जैसे हो गयी थी, वह गुड़ के स्वाद को चख तो रहा था जो पर बता नहीं सकता था। खुशी के मारे उसकी आंखें भर आईं और ललमतिया का चेहरा एक बार पुनः आंखों में तैरने लगा।

— श्वेता त्रिपाठी

सांता क्लोज

सांता क्लोज कौन है यह कहना अत्यंत कठिन है जबकि दिसंबर के आते ही इसके नाम की धुन सुनाई देने लगती है। क्रिसमस का त्यौहार आते ही सबसे पहले सांता की याद आती है, गोलमटोल सांता, ढेर सारे गिफ्ट लेकर आता है और हम सबको खुश कर देता है। क्रिसमस के दौरान आप दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं, हर जगह सांता क्लोज एक ही तरह से सजधज कर बच्चों के बीच खुशियां बांटता फिरता है। लेकिन बहुत कम ही लोग सांता के बारे में जानकारी



रखते हैं, हममें से शायद ही किसी को पता हो, कि सांता कौन है, कहां से आया है और इतना लोकप्रिय कैसे हुआ। सांता के बारे में कई मिथक दुनिया भर में व्याप्त हैं, आइए जानते हैं ऐसे ही कुछ मिथक के सांता के बारे में :-

सांता की उत्पत्ति तुर्की से हुई यह बात सच है या नहीं, ऐसा माना जाता है कि सांता देखने में सेंट निकोलस की तरह लगता है जो तीसरी सदी के सेंट थे। मायरा के पादरी एक अच्छे इंसान थे, जो बच्चों को तोफहें बांटते थे। ऐसा भी माना जाता है कि पादरी ने अपने चमत्कार से तीन बच्चों को जीवनदान दिया था। उनके लाल और सफेद रंग के कपड़े सभी को आकर्षित करते हैं। सांता के पास लाल रंग का बड़ा थैला होता है जिसमें बच्चों के लिए तोफहें होते हैं। लेकिन आज तक पता नहीं चला कि सांता वास्तव में ऐसा था या उसके

कपड़ों को बिजनेस के हिसाब से डिजाइन किया गया। इन दिनों सांता की ड्रेस एक ट्रेडमार्क बन चुकी है।

सांता क्लोज से जुड़ी एक प्रसिद्ध लोककथा के अनुसार वह उत्तर में किसी दूर क्षेत्र में एक बर्फीले देश में रहता है। सांता क्लोज के अमेरिकी संस्करण के अनुसार, वह उत्तरी ध्रुव में अपने घर में रहता है, जबकि अक्सर ऐसा कहा जाता है की फादर क्रिसमस फिनलैंड के लोपलैंड प्रान्त में कोरवातुन्तुरी के पहाड़ों में रहता है। सांता अपनी पत्नी श्रीमती क्लोज के साथ रहता है। उसके साथ एक अनिर्दिष्ट परन्तु बड़ी संख्या में कल्पित बौने और कम से कम आठ या नौ उड़ने वाले रेन्डियर रहते हैं।

एक और लोककथा जो गीत सांता क्लोज इज कमिंग टू टाउन में प्रचलित है, के अनुसार वह पूरी दुनिया के बच्चों की एक सूची बनाता है, उन्हें उनके व्यवहार शरारती और अच्छे के अनुसार अलग अलग श्रेणियों में रखता है और क्रिसमस की पूर्व संध्या वाली रात, दुनिया के सभी अच्छे लड़कों और लड़कियों को खिलौने, केन्डी और अन्य उपहार देता है और कभी कभी शरारती बच्चों को कोयला देता है। इस काम के लिए वह अपने एक बौने की सहायता लेता है जो वर्कशॉप में उसके लिए खिलौने बनाता है और रेन्डियर उसकी गाड़ी को खींचता है।

सांता प्यार और स्नेह से लबरेज होते हैं। उनके दिल में बच्चों के लिए ढेर सारा प्यार होता है। कई फिल्मों में हम सांता को हसंते हुए देखते हैं। 1890 में एक लेखक लुईस मोई ने एक किताब जुलेमंडेन्स बॉग में सांता के बारे में बताया कि वह कैसे बच्चों के लिए तोफहों को खरीदकर उनमें बांटते हैं। सांता के पास हिरन वाला स्लेथ है काफी लम्बे समय से लोगों के बीच यह बात प्रचलित है कि सांता अपने तोफहों को एक स्लेथ पर रखकर बांटते हैं जिसे हिरन चलाते हैं। ये बात सच है या सिर्फ कही सुनी बात, इस बारे में कुछ भी पता नहीं है। लेकिन ऐसी कई कहानियां सुनने में आती है।

सांता सिर्फ क्रिसमस पर्व पर ही बच्चों को तोफहा देता है। क्रिसमस के दौरान भगवान ईशु का जन्म होता है, ईसामसीह और सांता का कोई कनेक्शन नहीं है। सांता की उत्पत्ति के बारे में किसी को पता नहीं, लोग मानते हैं सेंट निकोलस ही सांता का असल रूप हैं। सांता का महत्व क्रिसमस पर्व के दौरान ही सबसे ज्यादा होता है।

सेंट निकोलस, सांता के नाम से जाना जाता है। पौराणिक और ऐतिहासिक दृष्टि से वे लोक कथाओं में प्रचलित एक व्यक्ति हैं। कई पश्चिमी संस्कृतियों में ऐसा माना जाता है कि सांता क्रिसमस की पूर्व संध्या, यानि 24 दिसम्बर की शाम या देर रात के समय के दौरान अच्छे बच्चों के घरों में आकर उन्हें उपहार देता है। सांता की आधुनिक आकृति की व्युत्पत्ति सिंटरक्लास की डच आकृति से हुई जिसे संभवतया उपहार देने वाले सेंट निकोलस से सम्बंधित माना जाता है। जनवरी को ग्रीस में बेसिल का फीस्ट दिवस मनाया जाता है, इस दिन तोहफों का आदान प्रदान किया जाता है।

सांता गरीबों के घर जाकर खानपान की सामग्री एवं बच्चों के लिये खिलौने बांटा करता था। सेंट निकोलस अपने उपहार आधी रात को ही देते थे क्योंकि उन्हें उपहार देते हुए नज़र आना पसंद नहीं था। वे अपनी पहचान लोगों के सामने नहीं लाना चाहते थे। इसी कारण बच्चों को जल्दी सुला दिया जाता। बस फुर्र से रेंडीयों को उड़ना आ जाता है और वे क्रिसमस लाईट की स्पीड से उड़ते हैं, बहुत तेज। बच्चे जो उनका इन्तजार कर रहे होते हैं।

सांता को आम तौर पर एक मोटे, हंसमुख सफ़ेद दाढ़ी वाले आदमी के रूप में चित्रित किया जाता है, जो सफ़ेद कॉलर और कफ़ वाला लाल कोट पहनता है, इसके साथ वह चमड़े की काली बेल्ट और बूट पहनता है उनकी कुछ छवियों में दाढ़ी होती है लेकिन मूँछ नहीं। यह छवि संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में 19 वीं सदी में लोकप्रिय हो गयी। इस छवि को लोकप्रिय बनाने में तत्कालीन राजनीतिक कार्टूनिस्ट थॉमस नास्ट ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। गानों, रेडियो, टेलिविजन, बच्चों की किताबों और फिल्मों के माध्यम से इस छवि को बनाये रखा गया है। संयुक्त राष्ट्र और यूरोप में, उन्हें अक्सर अमेरिकी सांता क्लोज के रूप में चित्रित किया जाता है, परन्तु उन्हें अक्सर फादर क्रिसमस कहा जाता है।

आज भी ऐसा कहा जाता है कि सांता अपनी वाइफ और बहुत सारे बौनों के साथ उत्तरी ध्रुव में रहते हैं। वहां पर एक खिलौने की फैक्ट्री है जहां सारे खिलौने बनाए जाते हैं। सांता के ये बौने साल भर इस फैक्ट्री में क्रिसमस के खिलौने बनाने के लिए काम करते हैं। आज विश्वभर में सांता के कई पते हैं जहां बच्चे अपने खत भेजते हैं, लेकिन उनके फिनलैंड वाले पते पर सबसे ज्यादा खत भेजे जाते हैं। इस पते पर भेजे गए प्रत्येक खत का लोगों को जवाब भी मिलता है। आप भी अपने खत सांता को इस पते पर भेज सकते हैं। क्रिसमस आने वाला है।

— कृष्ण कुमार दास

Y Y Y Y Y Y Y Y

कश्मीर

कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। कश्मीर के ज़र्रे ज़र्रे में खूबसूरती समाई है। कश्मीर की खूबसूरत वादियों में आने के बाद आप को ये महसूस होगा कि कश्मीर की हवाओं में खूबसूरती बहती है। कश्मीर की खूबसूरत वादियां हो या उनमें बसी हुस्न की परियां जिनकी खुशबू कश्मीर की वादियों में तैरती रहती है। कश्मीर की खूबसूरती उसके बागों से भी है। मुगल बादशाहों ने कश्मीर की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए एक से बढ़कर बागों का निर्माण करवाया था।

निशात बाग, डल झील के पूर्वी तरफ स्थित है, जिसे 1633 में हसन आसफ खान, मुमताज महल के पिता और नूर जहान के भाई द्वारा बनाया गया था। निशात बाग का अर्थ होता है खुशियों का बगीचा। इस गार्डन में फूलों की दुर्लभ प्रजातियां, चिनार वृक्ष और सरू के पेड़ भी पाए जाते हैं। यह मुगल गार्डन, क्षेत्र का सबसे बड़ा सीढ़ीदार उद्यान है। यहां स्थित सुंदर फव्वारों, बड़े से लॉन और खूबसूरत फूलों के कारण यह बगीचा काफी विख्यात है।

कश्मीर के ज़र्रे ज़र्रे में खूबसूरती समाई है। कश्मीर की खूबसूरत वादियों में आने के बाद आप को ये महसूस होगा कि कश्मीर की हवाओं में खूबसूरती बहती है। कश्मीर की खूबसूरत वादियां हो या उनमें बसी हुस्न की परियां जिनकी खुशबू कश्मीर की वादियों में तैरती रहती है। कश्मीर की खूबसूरती उसके बागों से भी है। मुगल बादशाहों ने कश्मीर की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए एक से बढ़कर बागों का निर्माण करवाया था।

कश्मीर का अच्छा-खासा इतिहास कल्हण के ग्रंथ राजतरंगिणी से और बाद के अन्य लेखकों से मिलता है। प्राचीन काल में यहाँ हिन्दू आर्य राजाओं का राज था। कश्मीर के प्राचीन इतिहास और यहां के सौंदर्य का वर्णन कल्हण रचित राज तरंगिणी में बहुत सुंदर ढंग से किया गया है। वैसे इतिहास के लंबे कालखंड में यहां मौर्य, कुषाण, हूण, करकोटालोहरा, मुगल, अफगान, सिख और डोगरा राजाओं का राज रहा है। कश्मीर सदियों तक एशिया में संस्कृति एवं दर्शन शास्त्र का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा और सूफी संतों का दर्शन यहां की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

स्थानीय लोगों का विश्वास है कि इस विस्तृत घाटी के स्थान पर कभी मनोरम झील थी जिसके तट पर देवताओं का वास था। एक बार इस झील में ही एक असुर कहीं से आकर बस गया और वह देवताओं को सताने लगा। त्रस्त देवताओं ने ऋषि कश्यप से प्रार्थना की कि वह असुर का विनाश करें। देवताओं के आग्रह पर ऋषि ने उस झील को अपने तप के बल से सुखा दिया। इसके साथ ही उस असुर का अंत हो गया और उस स्थान पर एक घाटी बन गई। कश्यप ऋषि द्वारा असुर को मारने के कारण ही घाटी को कश्यप मार कहा जाने लगा। यही नाम समयांतर में कश्मीर हो गया।

मौर्य सम्राट अशोक और कुषाण सम्राट कनिष्क के समय कश्मीर बौद्ध धर्म और संस्कृति का मुख्य केन्द्र बन गया। पूर्व-मध्ययुग में यहाँ के चक्रवर्ती सम्राट ललितादित्य ने एक विशाल साम्राज्य कायम कर लिया था। कश्मीर संस्कृत विद्या का विख्यात केन्द्र रहा। कश्मीर शैवदर्शन भी यहीं पैदा हुआ और पनपा। यहां के महान मनीषियों में पतञ्जलि, दृढबल, वसुगुप्त, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कल्हण, क्षेमराज आदि हैं। यह धारणा है कि विष्णुधर्मोत्तर पुराण एवं योग वासिष्ठ यहीं लिखे गये।

मध्ययुग में मुस्लिम आक्रान्ता कश्मीर पर काबिज हो गये। कुछ मुसलमान शाह और राज्यपाल जैसे शाह जैन-उल-अबिदीन हिन्दुओं से अच्छा व्यवहार करते थे पर कई जैसे सुल्तान सिकन्दर बुतशिकन ने यहाँ के मूल कश्मीरी हिन्दुओं को मुसलमान बनने पर, या राज्य छोड़ने पर या मरने पर मजबूर कर दिया। कुछ ही सदियों में कश्मीर घाटी में मुस्लिम बहुमत हो गया। मुसलमान शाहों में ये बारी बारी से अफगान, कश्मीरी मुसलमान, मुगल आदि वंशों के पास गया। मुगल

सल्तनत गिरने के बाद से सिख महाराजा रणजीत सिंह के राज्य में शामिल हो गया। कुछ समय बाद जम्मू के हिन्दू डोगरा राजा गुलाब सिंह डोगरा ने ब्रिटिश लोगों के साथ सन्धि करके जम्मू के साथ साथ कश्मीर पर भी अधिकार कर लिया डोगरा वंश भारत की आज़ादी तक कायम रहा।

कश्मीर का नाम लेते ही डल झील की तस्वीर आंखों के सामने उभरती है। डल झील श्रीनगर ही नहीं कश्मीर का एक प्रतीक हैं। इसे भारत की सबसे सुंदर झीलों में माना जा सकता है। करीब बीस वर्ग किलोमीटर की यह झील अपने आप में किसी शहर से कम नहीं। पर्यटकों की सुविधा की सभी जरूरी चीजें यहां उपलब्ध रहती है। किसी अच्छे होटल के कमरे की तरह इन हाउस बोट के कमरे भी सुरुचिपूर्ण तरीके से सजाये जाते हैं।

पर्यटन के अलावा डल झील में मछलियों का उत्पादन भी बड़ी मात्रा में होता है। ठंड के दिनों में जब श्रीनगर का तापमान शून्य से भी नीचे पहुंच जाता है, तब डल झील जम जाती है और बच्चे वहां क्रिकेट खेलते नजर आते हैं। शिकारों पर उन दिनों आमतौर पर विदेशी सैलानी ही ज्यादा होते हैं। झील के जमे होने के कारण यात्रियों को लाने ले जाने वाली छोटी नावे बंद कर दी जाती है। लोग चलकर सीधे शिकारे तक पहुंचते हैं। शिकारों में पर्यटकों को गर्म पानी, टीवी, रेस्टोरेंट, हीटर जैसी सुविधाएं तो मिलती ही है। शॉपिंग के लिए फेरी वाले भी शिकारों पर आते रहते हैं। इन फेरी वालों के पास कश्मीर के हस्तशिल्प से बनी चीजें, आर्टिफिशियल ज्वेलरी, केसर, शिलाजीत, पश्मीना, कश्मीर के कपड़े और अन्य वस्तुएं उपलब्ध होती हैं।

डल झील एक शहर जैसा है। डल झील पर सैलानियों के रुकने के लिए हाउस बोट तो है ही, रोजमर्रा की जरूरत की चीजों के बाजार भी लगे होते हैं। कश्मीर के कई परिवार इन शिकारों में भी रहते हैं। नाव पर ही सब्जी, किराने का सामान, दवा की दुकानें और यहां तक कि पोस्ट ऑफिस भी उपलब्ध है। यह देश का एक मात्र नाव पर चलता-फिरता पोस्ट ऑफिस है। डल झील में ही तैरते हुए खेत भी है। इन खेतों में सब्जियां और फूल उगाए जाते हैं।

डल झील तीन तरफ से पहाड़ों से घिरी है। इन पहाड़ों पर चिनार के बड़े-बड़े पेड़ हैं। अधिकांश समय यह पहाड़ बर्फ से ढके होते हैं और बादलों की टुकड़ियां इन पहाड़ों पर अटखेलियां करती हुई नजर आती हैं। डल झील में अपने पानी के स्रोत तो है ही, कई दूसरी झीलों का पानी भी आकर इस झील में मिल जाता है। डल झील की तरह ही नागिन झील में भी शिकारे पर्यटकों के लिए उपलब्ध है, लेकिन यह झील छोटी है, इसलिए यहां भीड़-भाड़ कम होती है और इसीलिए कुछ पर्यटक इसे चुनते हैं, ताकि यहां शोरगुल और भी कम हो।

कहा जाता है कि शाहजहां प्रसिद्ध मुगल सम्राट और अब्दुल हसन आसफ खान का दामाद था और शालीमार बाग को देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ था। इसको देखने के बाद उसने चुपके से यह आशा व्यक्त की थी कि उसके ससुर उसे यह बाग उपहार में दे दें। बाद में ससुर द्वारा बगीचे को गिफ्ट न करने पर उसने बगीचे में पानी की सप्लाई को रूकवा दिया था। शालीमार बाग मुगल बाग का एक उदाहरण है। इसे मुगल बादशाह जहाँगीर ने श्रीनगर में बनवाया था। श्रीनगर भारत के उत्तरतम राज्य जम्मू एवं कश्मीर की ग्रीष्म-कालीन राजधानी है। इसे जहाँगीर ने अपनी प्रिय एवं बुद्धिमती पत्नी मेहरुन्निसा के लिये बनवाया था, जिसे नूरजहाँ की उपाधि दी गई थी।

इस बाग में चार स्तर पर उद्यान बने हैं एवं जलधारा बहती है। इसकी जलापूर्ति निकटवर्ती हरिवन बाग से होती है। उच्चतम स्तर पर उद्यान, जो कि निचले स्तर से दिखाई नहीं देता है, वह हरम की महिलाओं हेतु बना था। यह उद्यान ग्रीष्म एवं पतझड़ में सर्वोत्तम कहलाता है। इस ऋतु में पत्तों का रंग बदलता है एवं अनेकों फूल खिलते हैं। यही उद्यान अन्य बागों की प्रेरणा बना, खासकर इसी नाम से लाहौर, पाकिस्तान में अन्य बाग विकसित किए गए।

— राहुल कर्मकार

Y Y Y Y Y Y Y Y

अग्निशाखा केसर

केसर विश्व का सबसे कीमती पौधा है। लाल-नारंगी रंग के आग की तरह दमकते हुए केसर को संस्कृत में अग्निशाखा नाम से भी जाना जाता है। केसर का वानस्पतिक नाम क्रोकस सैटाइवस है। अंग्रेजी में इसे सैफरन नाम से जाना जाता है। विश्व में केसर उगाने वाले प्रमुख देश हैं - फ्रांस, स्पेन, भारत, ईरान, इटली, ग्रीस, जर्मनी, जापान, रूस, आस्ट्रिया, तुर्किस्तान, चीन, पाकिस्तान के क्वेटा एवं स्विट्जरलैंड। आज सबसे अधिक केसर उगाने का श्रेय स्पेन को जाता है, इसके बाद ईरान को। कुल उत्पादन का 80% इन दोनों देशों में उगाया जा रहा है। वैसे तो इसका मूल स्थान दक्षिण यूरोप है, यद्यपि इसकी खेती स्पेन, इटली, ग्रीस, तुर्किस्तान, ईरान, चीन तथा भारत में होती है। भारत में यह



केवल जम्मू तथा कश्मीर के सीमित क्षेत्रों में पैदा होती हैं। इसकी गुटिकाएँ प्रति वर्ष अगस्त-सितंबर में रोपी जाती हैं और अक्टूबर-दिसंबर तक इसके पत्र तथा पुष्प साथ निकलते हैं।

केसर का पौधा 15-25 सेंटीमीटर ऊँचा होता है। पत्तियाँ सँकरी, लंबी और नालीदार होती हैं। इनके बीच से पुष्पदंड निकलता है, जिसपर नीललोहित वर्ण के एकाकी अथवा एकाधिक पुष्प होते हैं। पंखुडियाँ तीन-तीन के दो चक्रों में और तीन पीले रंग के पुंकेसर होते हैं। इनकी ऊपर तीन कुक्षियाँ, लगभग एक इंच लंबी, गहरे, लाल अथवा लालिमा युक्त हल्के भूरे रंग की होती हैं, जिनके किनारे दंतुर या लोमश होते हैं। केसर की गंध तीक्ष्ण, परंतु लाक्षणिक और स्वाद किंचित् कटु, परंतु रुचिकर, होता है।

इसका उपयोग मक्खन आदि खाद्य द्रव्यों में वर्ण एवं स्वाद लाने के लिये किया जाता है। चिकित्सा में यह उष्णवीर्य, उत्तेजक, आर्तवजनक, दीपक, पाचक, वात-कफ-नाशक और वेदनास्थापक माना गया है। अतः पीड़ितार्तव, सर्दी जुकाम तथा शिरःशूलादि में प्रयुक्त होता है।

केसर की खेती भारत में जम्मू के किश्तवाड़ तथा कश्मीर के पंपोर के सीमित क्षेत्रों में अधिक की जाती है। केसर यहां के लोगों के लिए वरदान है। क्योंकि केसर के फूलों से निकाला जाता सोने जैसा कीमती केसर जिसकी कीमत बाजार में तीन से साढ़े तीन लाख रुपये किलो है। यहां की केसर हल्की, पतली, लाल रंग वाली, कमल की तरह सुन्दर गंधयुक्त होती है।

असली केसर बहुत महंगी होती है। कश्मीरी मोंगरा सर्वोत्तम मानी गई है। एक समय था जब कश्मीर का केसर विश्व बाजार में श्रेष्ठतम माना जाता था। विदेशों में भी इसकी पैदावार बहुत होती है और भारत में इसकी आयात होती है।

जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर से सिर्फ 20 किलोमीटर की दूरी पर एक छोटे शहर पंपोर के खेतों में शरद ऋतु के आते ही खुशबूदार और कीमती जड़ी-बूटी केसर की बहार आ जाती है। वर्ष के अधिकतर समय ये खेत बंजर रहते हैं क्योंकि केसर के कंद सूखी जमीन के भीतर पनप रहे होते हैं। शरद ऋतु के अंत तक ये खेत बैंगनी रंग के फूलों से सज जाते हैं। और इस रंग की खुशबू सारे वातावरण में बसी रहती है।

इन केसर के बैंगनी रंग के फूलों को हौले-हौले चुनते हुए कश्मीरी लोग इन्हें सावधानी से तोड़ कर अपने थैलों में इकट्ठा करते हैं। केसर की सिर्फ आधा किलो मात्रा बनाने के लिए करीब 75 हजार फूल लगते हैं। प्रत्येक फूल में केवल तीन केसर ही पाए जाते हैं।

केसर को उगाने के लिए समुद्रतल से लगभग 2000 मीटर ऊँचा पहाड़ी क्षेत्र एवं शीतोष्ण सूखी जलवायु की आवश्यकता होती है। पौधे के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त रहता है। यह पौधा कली निकलने से पहले वर्षा एवं हिमपात दोनों बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन कलियों के निकलने के बाद ऐसा होने पर पूरी फसल चौपट हो जाती है।

इन फूलों की इतनी तेज़ खुशबू होती है कि आसपास का क्षेत्र महक उठता है। केसर की गंध तीक्ष्ण, परंतु लाक्षणिक और स्वाद किंचित् कटु, परंतु रुचिकर, होता है। इसके बीज आयताकार, तीन कोणों वाले होते हैं जिनमें से गोलकार मींगी निकलती है।

केसर को निकालने के लिए पहले फूलों को चुनकर किसी छायादार स्थान में बिछा देते हैं। सूख जाने पर फूलों से मादा अंग यानि केसर को अलग कर लेते हैं। रंग एवं आकार के अनुसार इन्हें - मोंगरा, लच्छी, गुच्छी आदि श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं। डेढ़ लाख फूलों से लगभग एक किलो सूखा केसर प्राप्त होता है जिसे निकालना एक कठिन कार्य है। केसर खाने में कड़वा होता है, लेकिन खुशबू के कारण विभिन्न व्यंजनों एवं पकवानों में डाला जाता है। इसका उपयोग मक्खन आदि खाद्य द्रव्यों में वर्ण एवं स्वाद लाने के लिये किया जाता है। गर्म पानी में डालने पर यह गहरा पीला रंग देता है। यह पानी में घुलनशील होता है, साथ ही अत्यंत पीला भी।

इसमें ईस्टर कीटोन एवं वाष्पशील सुगंधी तेल भी कुछ मात्रा में मिलते हैं। अन्य रासायनिक यौगिकों में तारपीन एलिडहाइड एवं तारपीन एल्कोहल भी पाए जाते हैं। इन रासायनिक एवं कार्बनिक यौगिकों की उपस्थिति केसर को अनमोल औषधि बनाती है। केसर की रासायनिक बनावट का विश्लेषण करने पर पता चला है कि इसमें तेल 1.37 प्रतिशत, आर्द्रता 12 प्रतिशत, पिक्रोसीन नामक तिक्त द्रव्य, शर्करा, मोम, प्रोटीन, भस्म और तीन रंग द्रव्य पाए जाते हैं। अनेक खाद्य पदार्थों में केसर का उपयोग रंजन पदार्थ के रूप में किया जाता है।

केसर का उपयोग आयुर्वेदिक नुस्खों में, खाद्य व्यंजनों में और देव पूजा आदि में तो केसर का उपयोग होता ही था पर अब पान मसालों और गुटकों में भी इसका उपयोग होने लगा है। केसर बहुत ही उपयोगी गुणों से युक्त होती है। यह कफ नाशक, मन को प्रसन्न करने वाली, मस्तिष्क को बल देने वाली, हृदय और रक्त के लिए हितकारी, तथा खाद्य पदार्थ और पेय को रंगीन और सुगन्धित करने वाली होती है।

चिकित्सा में यह उष्णवीर्य, आर्तवजनक, वात-कफ-नाशक और वेदनास्थापक माना गया है। अतः पीड़ितार्तव, सर्दी जुकाम तथा शिरःशूलादि में प्रयुक्त होता है। आयुर्वेद के अनुसार केसर उत्तेजक होती है और कामशक्ति को बढ़ाती है। यह मूत्राशय, तिल्ली, यकृत (लीवर), मस्तिष्क व नेत्रों की तकलीफों में भी लाभकारी होती है। प्रदाह को दूर करने का गुण भी इसमें पाया जाता है।

यह उत्तेजक, वाजीकारक, यौनशक्ति बनाए रखने वाली, कामोत्तेजक, त्रिदोष नाशक, आक्षेपहर, वातशूल शामक, दीपक, पाचक, रुचिकर, मासिक धर्म साफ लाने वाली, गर्भाशय व योनि संकोचन, त्वचा का रंग उज्ज्वल करने वाली, रक्तशोधक, धातु पौष्टिक, प्रदर और निम्न रक्तचाप को ठीक करने वाली, कफ नाशक, मन को प्रसन्न करने वाली, वातनाड़ियों के लिए शामक, बल्य, वृष्य, मूत्रल, स्तन में दूग्धवर्द्धक, मस्तिष्क को बल देने वाली, हृदय और रक्त के लिए हितकारी, तथा खाद्य पदार्थ और पेय को रंगीन और सुगन्धित करने वाली होती है। कुल मिलाकर केसर एक लेकिन इसके गुण हजार।

—- कुमारी साक्षी

Y Y Y Y Y Y Y Y

मुदगल नगरी

मुदगल नगरी कई पहाड़ियों से घिरा हुआ सुविकसित नगर था। वर्तमान में यह भारत के बिहार राज्य का प्रमुख केन्द्र मुंगेर शहर एवं जिला है। मुंगेर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत, गंगा नदी पर स्थित है। कहा जाता है कि मुंगेर की स्थापना गुप्त शासकों ने चौथी शताब्दी में की थी। यहाँ एक किला है, जिसमें मुस्लिम संत शाह मुश्क नफ़ा जिनकी मृत्यु 1497 में हुई थी, की मज़ार है। 1793 में बंगाल के नवाब मीर कासिम ने मुंगेर को अपनी राजधानी बना कर यहाँ शस्त्रागार और कई महलों का निर्माण करवाया। महाभारत में मुंगेर शहर को 'मोदागिरि' कहा गया है।

किंवदन्ती के अनुसार मुंगेर की नींव डालने वाला चंद्र नामक राजा था। नगर के निकट सीताकुण्ड नामक स्थान है। इस कुंड का नाम पुरुषोत्तम राम की धर्मपत्नी सीता के नाम पर रखा गया है। कहा जाता है कि जब राम सीता को रावण के चंगुल से छुड़ाकर लाए थे तो उनको अपनी को पवित्रता साबित करने के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी। धर्मशास्त्रों के अनुसार अग्नि परीक्षा के बाद सीता माता ने जिस कुंड में स्नान किया था यह वही कुंड है। कहा जाता है कि सीता अपने दूसरे वनवास काल में अग्नि प्रवेश के लिए उतरी थी। मुंगेर से 6 कि.मी. पूर्व में स्थित सीता कुंड मुंगेर आनेवाले पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। चंडी स्थान भी प्राचीन स्थल है। एक किंवदन्ती में मुंगेर का वास्तविक नाम मुनिगृह भी बताया जाता है। कहते हैं कि यहीं पहाड़ी पर मुदगल मुनि का निवास स्थान होने से ही यह स्थान मुदगल नगरी कहलाता था। कुछ विद्वानों का मत है कि मुंगेर का एक नाम हिरण्यपर्वत भी है, जो सातवीं शती या उसके निकटवर्ती काल में प्रचलित था।

मुंगेर में मुस्लिम बादशाहों ने भी काफ़ी समय तक अपना मुख्य प्रशासन केन्द्र बनाया था जिसके फलस्वरूप यहाँ पर उस समय के कई अवशेष हैं। मुगलों के समय का एक जिला भी उल्लेखनीय है। यह गंगा के तट पर बना है। इसके उत्तर पश्चिम के कोने में कष्टारिणी नामक गंगा घाट है। जहाँ 10वीं शती का एक अभिलेख है। किले से आधा मील पर 'मान पत्थर' है, जो गंगा के अन्दर एक चट्टान है। कहा जाता है कि इस पर श्रीकृष्ण के पदचिह्न बने हैं। किले के पश्चिम की ओर मुल्ला सईद का मकबरा है। ये अशरफ़ नाम से फ़ारसी में कविता लिखते थे और औरंगज़ेब की पुत्री जेबुन्निसा के काव्य गुरु भी थे। इनका मूल निवास स्थान कैस्पियन सागर के पास मजनदारन नामक स्थान था। अकबर के समय में टोडरमल ने बंगाल के विद्रोहियों को दबाने के लिए अभियान का मुख्य केन्द्र मुंगेर में बनाया था। शाहजहाँ के पुत्र शाहशुजा ने उत्तराधिकार युद्ध के समय इस स्थान में दो बार शरण ली थी।

मुंगेर किला का इतिहास बंगाल के नवाब मीर कासिम से जुड़ा हुआ है। बंगाल पर जब अंग्रेजों ने आक्रमण किया, तो मीर कासिम ने मुंगेर में गंगा तट पर किला का निर्माण कराया और मुंगेर को ही अपनी राजधानी बनाया। किला के बाहर चारों तरफ से करीब 30 फीट गहरा गड्ढा है। इस गड्ढे का निर्माण मीर कासिम ने अंग्रेजों के आक्रमण से बचने के लिए कराया था।

किला परिसर में ही मीर कासिम का आवास था। मीर कासिम ने किला परिसर में ही सुरंग का निर्माण भी कराया। सुरंग का एक सिरा गंगा घाट पर निकलता था जिससे नवाब मीर कासिम की बेगम और अन्य महिलाएं गंगा घाट तक पहुंचती थी। वहीं, सुरंग का दूसरा सिरा पीर नफा पहाड़ की ओर निकलता था लेकिन, सुरंग अब मिट्टी से भर गया है। किला में तीन द्वार हैं मुख्य द्वार, उतरी और दक्षिणी द्वार। तीनों द्वार पर मीर कासिम के सैनिक तैनात रहते थे। 1885 में यह किला हेनरी डेरोजियो के कब्जे में आ गया जिसका उन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था और उनके सहयोग से किला द्वार पर बड़ी घड़ी लगाई गई।

— अवधेश सिंह

योग्यता नेता बनने की !

“सर ! मेरा नाम रोशन है । मैं आपके पास के गाँव रघुनाथपुर में रहता हूँ । मेरे माता पिता ने मेरा नाम रोशन रखा है, अतः मैं अपना नाम रौशन करना चाहता हूँ । मैं सर ! बी.ए. पास हूँ मुझे अपने दल में शामिल कर लीजिए । मैं बहुत ईमानदार हूँ, काफी मेहनती हूँ, खूब आपका तथा समाज की सेवा करूँगा । कृपया मुझे अपने दल में शामिल कर लीजिए तथा रघुनाथपुर से मुझे पार्टी का टिकट दे दीजिए । मैं अवश्य जीत जाऊँगा, बस थोड़ी आपकी कृपा दृष्टि चाहिए । मैंने आजतक कोई उल्टा सीधा कार्य नहीं किया है , बहुत ईमानदार हूँ सर ! आप मुझपर एक बार भरोसा करके तो देखिए रोशन एक सुर में ही इतना कह डाला ।”

“नेता जी ने माथा खुजलाया, मंद मंद मुसकुराये तथा कहा ठीक है । नेता बनने की योग्यता है तुममें तो इसकी परीक्षा लेनी होगी तब तक तुम मेरे चंद सवालों का जबाब ही दो ।”

“रोशन यह सुनकर बाग बाग हो गया और कहा, सर पूछिए ।”

“अच्छा बतलाओ । अबतक तुम कितनी हत्याएँ कर चुके हो ? सर यह क्या कह रहे हैं ? रोशन तपाक से पूछ बैठा । नेता जी ने कहा तर्क-वितर्क मत करो । हाँ या ना मैं सिर्फ जवाब दो ।” रोशन ने सिर्फ सिर हिलाया । “कितने बलात्कार कर चुके हो ? कितनी बार जेल गये हो ? कितनी बार दंगा करवाये हो ? रोशन का माथा ठनका और माथा पकड़ कर बैठ गया और मन ही मन सोचने लगा क्या लिखा पढ़ी का कोई दाम नहीं ? क्या सज्जनता, ईमानदारी, परोपकारिता बस दिखावे के लिए नेता लोग जनता के सामने बोलते हैं । रोशन को निराश हताश देख नेता जी प्रश्न का मॉडल थोड़ा हल्का कर देते हैं। और घबराओ मत रोशन, तुम्हें अपना नाम रौशन करना है तो नेता जी के लिए ली जा रही परीक्षा में कम से कम पास मार्क 40% तो पा जाओ, फिर मैं तुम्हें अपने पार्टी से टिकट भी दूँगा और जिताकर मंत्री भी बना दूँगा । यह सुनकर रोशन को लगा कि नेता जी मुझसे मजाक कर रहे थे । सो पुनः हिम्मत कर रोशन ने कहा सर ! पूछिए न अपना नेता बनने वाले प्रश्न ?

“क्या स्कूल कॉलेज में कभी छात्र नेता बना था ?”

नहीं

“अब तक कितनी बार मारपीट, छात्र आन्दोलन किये हो ?”

एक बार भी नहीं

“कितनी बार जेल गए हो ?”

कभी नहीं

“कितनी बार धरना प्रदर्शन कर रेल रोके हो या सड़क जाम किये हो ?”

कभी नहीं

“अबतक कितने लोगों का मर्डर किये हो ?”

“सर ! क्या कहते हैं ?”

तब तो तुममें नेता बनने का कोई भी लक्षण नहीं है। मुझे अफसोस हो रहा है । रोशन, तुम जा सकते हो । सर ! एक चान्स और दीजिए थोड़ा सीधा तथा सरल प्रश्न पूछिए ना सर ! मैं पास मार्क ले आऊँगा । अच्छा एक चांस देना ही होगा ।

ठीक है, रोशन तीसरी बार प्रश्न का सेट बदल रहा हूँ। यह अंतिम परीक्षा है। समझे ? सोच समझकर जबाब देना। डरना मत। मैं हूँ न तेरे लिए।

“क्या तुम घड़ियाली आँसू जनता के सामने बहा सकते हो ?”

नहीं। “क्या तुम मानव के लाश पर चल सकते हो ?”

नहीं। “क्या तुम धर्मात्मा बनकर लोगों को ठग सकते हो ?”

नहीं। “क्या मुझे एक कुंवारी कन्या प्रति रात लाकर दे सकते हो ?”

नहीं। “क्या तुम लोगों को वेबकुफ बनाकर उसकी गाठी कमाई को हड़प सकते हो ?”

नहीं। “क्या तुम किसी का कत्ल, बलात्कार, अपहरण कर सकते हो ?”

नहीं। क्या तुम आपस में दो भाईयों, समाज के दो धर्म वालों को लड़ा सकते हो ?

नहीं। “क्या तुम कालाधन को सफेद धन बना सकते हो ?”

नहीं। “क्या तुम अरबों खरबों रुपये के कोयला, सिमेंट, बालू, लोहा, अलकतरा चारा आदि को डकार सकते हो ?”

नहीं। “क्या तुम जनता के सामने भीख माँग सकते हो ?”

नहीं। “तो तुम नेता नहीं बन सकते। नेता बनने के लिए सर्व गुण सम्पन्न होना चाहिए। घबराओ मत, रोशन ! तुम एक काम करो, चाय की दुकान चलाओ। हो सकता है तेरी किस्मत भी चमके और तुम देश का प्रधानमंत्री बन जाओ। जाओ मेरी यही शुभकामना है।”

जरा हंसिए तो

डॉक्टर: मरीज से: तुम दिन में कितनी सिगरेट पिते हो?

मरीज: जी 20

डॉक्टर: देखो अगर मुझसे इलाज कराना हो तो तुम्हें सिगरेट से परहेज करना होगा, एक काम करो, एक नियम बना लो, सिर्फ भोजन के बाद ही एक सिगरेट पियोगे।

मरीज ने डॉक्टर की बात मानकर इलाज शुरू किया। कुछ ही महीने बाद मरीज का स्वास्थ्य एकदम सुधर गया।
डॉक्टर: देखा मेरे बताये गए परहेज से तुम्हारा स्वास्थ्य कितना सुधर गया।

मरीज: लेकिन डॉक्टर साहब दिन में 20 बार भोजन करना भी तो कोई सरल काम नहीं है।

विवाहित (अविवाहित मित्र से कहा) - मित्र आपने अभी तक शादी क्यों नहीं की? .

अविवाहित (मुस्कराते हुए) - जाको राखे साइयां, मार सके ना कोय...

एक युवती ने अपनी सहेली की मृत्यु का दुःख व्यक्त करते हुए उसके पति से कहा: ‘तीन महीने हो गए, मेरी सहेली का देहांत हुए, पर मेरा दिल अब भी किसी काम में नहीं लगता। आप प्लीज उसकी कोई प्यारी वस्तु मुझे दें, मैं अपने कलेजे से लगा कर रखूंगी।’

पति: ‘उसकी सबसे प्रिय वस्तु तो मैं ही हूँ। कहिए तो मैं आपके साथ चलूँ।’

— आदिश

भारतीय संस्कृति की महिमा

किसी देश की संस्कृति वह सुदृढ़ आधारशिला है जिस पर वहां के लोगों का ज्ञान, विश्वास, नैतिकता, रीति-रिवाज या अन्य क्षमताएं तथा आदर्ते निर्मित होती हैं। केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो संस्कृति निर्मित कर सकता है। संस्कृति का लक्ष्य है कि लोकसंग्रह की मर्यादा को सुरक्षित रखा जाए तथा निरंतर सर्वांगीण प्रगति की जाए।

संस्कृति का आधार आंतरिक ध्यान तथा एकाग्रता होना चाहिए न कि केवल भौतिकता। मनुष्य चिंतनशील तथा मननशील प्राणी है तथा विचारों तथा भाव का निरीक्षण करके उचित निर्णय लेकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित करके उसको अनथक परिश्रम द्वारा साकार रूप प्रदान कर सकता है।

मनुष्य का परम धर्म तथा सर्वोपरि कर्तव्य है कि वह अपने विचारों तथा भावनाओं को निरंतर शुद्ध एवं परिष्कृत करता रहे एवं अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति तथा समर्पण द्वारा कर्म कुशलता से उत्तरोत्तर प्रगति के कीर्तिमान स्थापित करता जाए जो अन्य व्यक्तियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो। सुसंस्कृत होने के लिए प्रतिपल जागरूक रहकर कर्मशील रहने की आवश्यकता है। संस्कृति कोई वस्तु नहीं है जो बाजार से खरीदी जा सके इसे घोर प्रयत्न से अर्जित करना पड़ता है।

मनुष्य परमात्मा का अंश है पर उसमें परमात्मा के दिव्य ज्ञान, गुण तथा शक्तियां सुप्तावस्था में पड़े हैं। अपने मन को ध्यान तथा एकाग्रता द्वारा परमात्मा का चिंतन करके दिव्यता को ग्रहण करना तथा प्रशस्ति करना भारतीय संस्कृति का लक्ष्य रहा है। इसी कारण भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी तथा विस्तृत हैं। भारतीय संस्कृति भगवता, आध्यात्म तथा मानवता का आधार है एवं चेतना के विकास द्वारा प्रेम, समरसता तथा मानवीय मूल्यों को संपूर्ण मान्यता प्रदान करती है। इसमें चरित्र तथा आंतरिक गुणों पर विशेष बल दिया गया है। मनुष्य के कर्म तथा व्यवहार में दिव्य गुण परिलक्षित होने चाहिए।

पश्चात्य संस्कृति भोग प्रधान है, बड़े खेद की बात है कि वर्तमान परिप्रेक्ष में भारतवासी भी इस भौतिकता प्रधान सभ्यता की चंगुल में फस रहे हैं जिसमें मानवीय मूल्यों का हास हो रहा है। संबंधों में कोई प्रेम नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ का गुलाम होता जा रहा है। इस शिक्षा का लक्ष्य केवल पैसा बनाना रह गया है, भ्रष्टाचार का बोलबाला है, गरीबी अमीरी का अंतर काल बढ़ गया है, पर्यावरण प्रदूषित हो गया है तथा प्रत्येक व्यक्ति चिंता तथा तनाव से ग्रस्त हो गया है।

वैज्ञानिक उन्नति ने सुविधाएं प्रदान की है किंतु वास्तविक सुख तथा प्रेम संबंध लुप्त हो गए हैं। मनुष्य स्वार्थ अहंकार तथा तुच्छ इच्छाओं का दास हो गया है। ऐसी सोचनीय स्थिति में भारतीय संस्कृति की शरण में जाकर जीवन का उत्थान किया जा सकता है तथा मानवता को नवीन रूप प्रदान किया जा सकता है, यही प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोत्तम धर्म तथा परम कर्तव्य होना चाहिए। इसके लिए भारतीय संस्कृति के निम्नलिखित तत्वों का सदा चिंतन तथा मनन किया जाए एवं उनको प्रयत्न के द्वारा आचरण में लाया जाए जिसके परिणाम स्वरूप एक महान मुक्त क्रांति द्वारा मानवता का दिव्य रूपांतरण संभव है।

आध्यात्मिक तथा विज्ञान दोनों ही आनंदस्वरूप प्रमात्मा की ही अभिव्यक्तियां हैं। हमें परमात्मा से युक्त होकर आंतरिक तथा बाह्य दोनों पक्षों में प्रगति करनी होगी। अहंकार, स्वार्थ मन की नकारात्मक वृत्तियां हमें छू भी न पाएं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हमें सद्बुद्धि, शक्ति तथा ज्ञान दें ताकि हम दिव्यता को अर्जित करें तथा उसका विस्तार करें।

वीर गाथा

जो शीश अपना देकर, शीश ऊपर कर गये,
माँ भारती के आन पर जीवन बलिदान कर गये।
दे के जान भी फटने न दी माँ की चुनरिया,
वीरता के इतिहास की गढ़ रहे हम कहानियाँ ॥

छाँव हो या धूप हो या फिर बरसात हो,
शरद् की चाँदनी या हेमंत की सौगात हो।
बाँधे कफन चल पड़े हम तोड़ दी सब बेड़ियां,
वीरता के इतिहास की गढ़ रहे हम कहानियाँ॥

दे गये हमें निशानी प्यार की दुलार की,
बहनों की राखियां, मां के विश्वास की।
त्याग अपना घर द्वार बढ़ चले सीमा को
वीरता के इतिहास की गढ़ रहे हम कहानियाँ॥

— अभिनव सिंह



हवाई प्यार

हफ्तों उनसे मिले हो गए हमें
बिछुड़न में हम ढीले हो गए
उनके जूड़ों की ऊँचाईयाँ छूने
कई मंजिलें के फासले हो गये
रसोईए से प्यार उनका हुआ
जिंदगी में हमारे मिठास कम हो गये

आज उनकी शादी हुई, कल तलाक
जाने क्या गजब वाकिये हो गए
माशूक की यादों के ऊँचे महल
जाने क्यूँ हवा- हवाई हो गए
हाशिये को छोड़ छपी जब खबर
दूर सारे हमारे शिकवे हो गए

—चंद्रकांत



राजभाषा पखवाड़ा -2016 के दौरान आयोजित पूर्व रेलवे हिन्दी उच्च विद्यालय
साहेबगंज में आशुभाषण प्रतियोगिता के कुछ दृष्य



मालदा मंडल द्वारा स्वच्छता के संबंध में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर किए गए सफाई कार्यक्रम के कुछ दृश्य

